the lutheran visitor, charleston, S. C., SEPTEMBER 4, 1874
THE LUTHERAN VISITOR.
Charleston, S. O.
Friday, Soptember 4, 1874.
 In essentials, unity; in non -ascential
 -





|  |  |
| :---: | :---: |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| Sraty lio loro with temem Very |  |
|  |  |
|  |  |
| melary whare reetieal mang sub- |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| Here, too, we ean not particularize,but would express our thanks and |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| Marn. Eitarn: it will periapm, |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| the Church and the prospects ofLatheranism in this portion of Geor-gia. Especially do we think it will |  |
|  |  |
| $\begin{aligned} & \text { be highly pleasing to you to bear } \\ & \text { something from the mother church } \\ & \text { of this section. } \end{aligned}$ |  |
|  |  |
|  |  |
| We have long ago heard of PlonitPilgrim charch, and our auxiety was xcited to "ome and see" for our |  |
|  |  |
| eevrex, for we tuought the ename itselfras iuriting to all pilkrims journey ras iuviting to all pilgrims jouru ouring in a strange land. But to |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| Having lef Atlanta at 10 P. M. on |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| vosing our orders were from headwe did the best we obeyed, and |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| (tay |  |
|  |  |
| hear us talk. And it afforded us a |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |

